स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,

नांदेड

“‘बिहारी सतसई’ में विभिन्न ज्ञान शाखाओं के संदर्भः

एक अनुशीलन “

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड़ की पीएच डी (हिंदी) उपाधि हेतु

प्रबंध की रूपरेखा।

: शोधछात्रा :

शिरसे निकीता चंद्रकांत

(एम.ए., एम.फिल., बी. एड.)

: शोधनिर्देशक :

डॉ. जोगेंद्रसिंह मोतीसिंह बिसेन

(एम.ए., एम. फिल., पीएच-डी.)

प्र. कुलपति

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नादेड

अध्ययन केंद्र

दयानंद कला महाविद्यालय, हिंदी विभाग, लातूर

२०२३

'बिहारी सतसई' में विभिन्न ज्ञान शाखाओं का संदर्भः एक अनुशीलन

१) **भूमिका**:-

किसी भी काम का अध्ययन करते समय उस काल की क्या परिस्थिति है यह जानना भी आवश्यक है। उस परिस्थिति से तत्कालीन जीवन का यथार्थ चित्रण हमारे सामने आता है। हिंदी साहित्य के चार कालखंड माने जाते है वह निम्नांकित है-

I) आदिकाल संवत् 1050-1375

II) भक्तिकाल संवत 1375-1700

III) रीतिकाल संवत् 1700-1900

(IV) आधुनिक काल संवत् 1900- अद्यावधि तक

बिहारी रीतिकाल के कवि है। रीतिकाल को अलग-अलग नामो से जाना जाता है, जैसे श्रृंगार काल, उत्तर मध्यकाल, रीतिकाल, कलाकाल आदि। इस काल में श्रृंगार की प्रधानता रही है। यह युग मुक्तक- रचना का युग रहा है। मुख्यत इस युग में कवित्त, सवैये और दोहे लिखे गए है। रीतिकाल के अधिकांश कवि दरबारी होते थे। दरबार में राजाओं का मनोरंजन और कलाविलास करना कवि का उद्देश्य था।

संस्कृत साहित्य में 'रीति' का अर्थ होता है- 'विशिष्ट 'पद रचना" रीतिकाल को काव्य की 'आत्मा' भी कहाँ जाता है। रीतिकाल को समृद्धि और विलासिता का काल कहते है। इस काल में धार्मिक प्रभाव का लोप होता चला गया। इसका परिणाम यह हुआ कि भक्ति जो मूलरूप प्रेम है। वह धीरे- धीरे लौकिक श्रृंगार के रूप में परिवर्तित होती गई। रीति या श्रृंगार काल में रीति साहित्य शास्त्रीय बंधनों से जकड़ा हुआ था। इस काल के प्रमुख कवियों में बिहारी, केशवदास, पद्माकर, भूषण, देव, मतिराम्, चिन्तामणि' बोधा, घनानंद, आलम आदि माने जाते है।

१) शोधविषय का उद्देश्य :-

बिहारी रीतिकाल के प्रमुख कवियों में से एक है। स्नातक तथा स्नातकोतर कक्षाओं में अध्ययन करते समय मैने बिहारी जी को पढ़ा। इस अध्ययन के समय यह ज्ञात हुआ कि बिहारी

मात्र श्रृंगार के कवि नहीं है। श्रृंगार के साथ ही अन्य विषयों का ज्ञान भी बिहारी जी को है। भारत ने 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को स्वीकार किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा को बढ़ावा देने की पक्षधर है। साथ ही विभिन्न ज्ञान शाखाओं का एक-दूसरे से संबंध है यह भी दर्शाती है। बिहारी जी की रचनाओं में ज्ञान की विभिन्न शाखाओं के संबंधों पर अनुसंधान करने की जिज्ञासा मेरे मन में जागृत हुई और मैंने इस विषय पर अनुसंधान करने का निर्णय लिया।

इस शोधकार्य के उद्देश्य निम्नलिखित है-

1) बिहारी जी के जीवन एवं साहित्य का अध्ययन।

ll) बिहारी जी के 'सतसई में ज्ञान की विभिन्न शाखाओं के संदर्भ।

ll) बिहारी जी की रचनाएँ एवं ज्ञान की विभिन्न शाखाओं की मनुष्य जीवन में उपयोगिता।

2) अनुसंधान की पद्धतियों :-

" '**बिहारी सतसई' में विभिन्न ज्ञान शाखाओं का संदर्भः एक अनुशीलन"**

प्रस्तुत विषय के अनुसंधान पूर्ति हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान तथा विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। आवश्यकतानुरूप सैद्धांतिक, व्याख्यात्मक, अनुसंधान पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा। इस अनुसंधान कार्य के लिए मूलविषय से संबंधित मूल ग्रंथ, आधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ, कोष ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाएँ आदि का उपयोग किया जाएगा

3) अनुसंधान की उपयोगिता :-

प्रत्येक कार्य का कुछ-न-कुछ उद्देश्य तथा उपयोगिता होती है। बिना उपयोगिता वह कार्य निरर्थक सिद्ध होगा प्रस्तुत शोध कार्य की उपयोगिता इस प्रकार है-

1) बिहारी जी के साहित्य की जानकारी प्राप्त करना।
2) बिहारी जी की रचनाओं में विभिन्न ज्ञानशाखाओं के संदर्भ खोजना।
3) उन ज्ञानशाखाओं की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत करना।

4) बिहारी जी की रचनाए एवं विभिन्न ज्ञानशाखाओं की मनुष्य के जीवन में उपयोगिता को ढूंढना।

अनुसंधान कार्य सुचारू रूप से संपन्न होने के लिए तथा अनुसंधान की सुविधा की दृष्टि से मैंने शोधप्रबंध को निम्नांकित आठ (८) अध्यायों में प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं।

अध्याय- १

बिहारी जी का जीवन तथा साहित्यिक परिचय

अध्याय २

श्रृंगार के कवि बिहारी

अध्याय ३

'बिहारी। सतसई' में प्राप्त विभिन्न ज्ञानशाखाओं का संक्षिप्त परिचय-

अ) ग्रह-नक्षत्र शास्त्र

आ) ज्योतिषशास्त्र

इ) मानसशास्त्र

ई) प्रबंधन शास्त्र

उ) नीतिशास्त्र

ऊ) समाजशास्त्र

ऋ) इतिहास

ऌ) गणितशास्त्र

ए)वैद्यकशास्त्र

ॲ) रंगशास्त्र

ऐ) काव्यशास्त्र

ओ) पुराण

ऑ) प्रकृति शास्त्र आदि।

अध्याय -४

ज्योतिषशास्त्र, ग्रह-नक्षत्र शास्त्र, मानसशास्त्र, प्रबंधन शास्त्र से संबंधित दोहों का विश्लेषणात्मक अध्ययन तथा समाज की दृष्टि से उपयोगिता।

अध्याय-५

नीतिशास्त्र, समाजशास्त्र तथा इतिहास से संबंधित दोहों का विश्लेषणात्मक अध्ययन तथा समाज की दृष्टि से उपयोगिता।

अध्याय ६

गणित, वैद्यकशास्त्र, रंगशास्त्र से संबंधित दोहों का विश्लेषणात्मक अध्ययन तथा समाज की दृष्टि से उपयोगिता।

अध्याय ७

काव्यशास्त्र, पुराण तथा प्रकृतिशास्त्र से संबंधित दोहों का विश्लेषणात्मक अध्ययन तथा समाज की दृष्टि से उपयोगिता।

अध्याय ८

उपसंहार

शोधछात्रा — शोधनिर्देशक

शिरसे निकिता चंद्रकांत — डॉ. जोगेंद्रसिंह मोतीसिंह बिसेन

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1) बिहारी सतसई
2) भारतीय ज्योतिष
3) अध्यात्म ज्योतिष
4) भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका
5) वेद और उपनिषद
6) 9 गृह और संबंधित विषय
7) मानव शरीर रचना और क्रिया विज्ञान
8) मानव और संस्कृति
9) समाजशास्त्र के सिद्धांत
10)बिहारी रत्नाकर
11)बिहारी सतसई तुलनात्मक अध्ययन
12) बिहारी सतसई का सांस्कृतिक अध्ययन